

ॐ नमः श्रीचक्रसंवनाय ॥ प्रसन्नपदमान्मानं ॥ श्रीहनुकजगन्नाथारुत्वासर्वार्थ
 संपदशकुर्यात्तु गच्छिनाथस्थितवमादो विना वयं ॥ श्रीसच्चिदात्मनस्तु कः
 ठागानादलाद्यर्थ ॥ विश्ववृत्तिस्तज्जुं वजासनहोषिपरं ॥ स्फुटिकन्द्यमू
 लास्यनिलसया नूहागर्ला ॥ स्वारूपहृदिषिष्वजासिमसिपमिने ॥ वजसत्वं वि
 श्ववैश्वविरुपाकनीकनं ॥ तद्वक्तुं सजसस्त्रिं सर्वनागगिनाडुनं ॥ नचनवि



स्वसंगमल्लद्वयार्थपुवादिनं। पुल्ल्यागतिमरु। कालावजहिः कावसंरुवं॥ तद्दुर्वक्यं।
श्री। कर्धं मरुतं न वदामकं। ऊरुगमर्द्धकालकंधानीलद्वयान्वितं॥ चक्रसंयतलान्वकं॥
रुमाधुलिविगुहं। स्वरागितद्विजं॥ अधिविजडादिषडसान्वितं॥ रुद्रवज्रासिखद्वं।
गंसिवाजकनगुहं। निष्कर्णकशिवा मालासद्वमुरुनसप्रियं॥ दक्षिणं चिग्नान्जु
नं वामान्जुलपीठनं। भोक्तासनसमाख्ययहूकं स्वप्रणवयत्॥ संवृद्धं द्विद्वयसंयतं॥

काव्यवक्रिरुगुर्जुनं। रुद्रहानसत्यमज्ञाय भोलिनं जलसाविनं॥ पद्ममानन्दसुखात्मा।
दस्युवत्संरुपवृषिनी। सर्विण्यहानसोदर्ययागियागं समापूयात्॥ भग्ननायकस
धुस्यं निःसंगमद्वयमानुमापुक्षपायविधानेन वन्द्ये प्रयागग॥ अलिका।
लिमसायागमरावयत्सूर्यमकुलं। तण्डूकालसंरुतं वज्रसूर्यविसमन्वितं॥ भव
हृमर्द्धपर्यर्द्धेन ववर्मसंवाहनं। रुमाधुलितगमनं रुद्रकुलवज्रकद्विती॥ चः

लयना करवदीगि वामन क कनाटक (गगाई मलु मालाहि रुतदा वमना हव ॥
 वदु कालासास्य न क नु विना सिन ॥ पिगाई क म म शाख म कूट क रु रु ल ॥
 श्री अस्मारा न म म र रु गिले प म क पाल क ॥ व ड ल द सिक ध म या ऊ ग म प नि व न २
 दी ॥ ॥ ५ हं र द्वा हा ॥ ॥ ७० ॥ नि स क्रि फ दि रु ज ह न क स प ना म ध न गी ह मा प ॥

अमर कथा	
76	